ग्राम पंचायतों की शासकीय कार्यक्रमों की जन समावेशन में भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन

पीएच०डी० (समाजशास्त्र) की उपाधि हेतु प्रस्तावित रूपरेखा

funशd

डॉ. ईश्oj Lo:lk Lkgk;
अिसस्टेंट प्रोफसर

शk/kkfFkuh

Áhfr d|ekjh

lekt'kkL= ,o jktuhfrd foKku] lektfoKku ladk;
n;kyCkkx ,td'kuy bULVhV;V ¼MhEM fo'ofo?kky;½
n;kyCkkx vkxjk 282005
2020

Ikfjp;kRed Hkfedk

भारत एक लोकतान्त्रिक देश हैं।जिसमे सभी के हितो की रक्षा के लिए संविधान में विविध प्रावधान किये गये है लेकिन इसके बाबजूद हमारा समाज आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त नही कर पा रहा है। इसके पीछे सबसे बृहद कारण लोगो की विकास प्रक्रिया में भागीदारी न होना है।लोगो का समाज विकास कार्यक्रमों में भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये स्थानीय स्वशासन की प्रक्रिया के आधार पर ही शक्ति एवं सत्ता को विकेन्द्रित किया गया है तथा शक्ति एवं सत्ता के आधार पर ही लोगो को उनके अधिकार एवं कर्तव्यो के प्रति जागरुक किया है।इनके द्वारा व्यक्ति अपने लक्ष्यो को प्राप्त करने में सफल हो पाते है। परन्तु आधुनिक समाज में शक्ति एवं सत्ता की प्रक्रिया का प्रयोग केवल उच्च वर्ग व शिक्षित व्यक्तियो के द्वारा ही इसका पूर्ण प्रयोग किया जाता हैं जबकि मध्यम एवं निम्न वर्ग के व्यक्ति इस प्रक्रिया से वंचित रह जाते है। इसी कारण समाज में उच्च वर्ग के व्यक्तियो का प्रभुत्व दिखाई देता है। प्रभुत्वता के कारण मध्यम एवं निम्न वर्ग के व्यक्ति समाज विकास कार्यक्रमों में अपनी सहभागीता सुनिश्चित नही कर पाते है। जिससे समाज के सभी वर्गो द्वारा आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को प्राप्त नही कर पाते है। इसी प्रकार मैसूर नरसिंहाचार श्रीनिवास ने जाति प्रथा की प्रक्रिया के आधार पर प्रभुत्व जाति की अवधारणा को विकसित किया। प्रभु जाति वह जाति है जिसमे भू स्वामित्व नौकरी शिक्षा जैसे कारणो के आधार पर जाति गांव या क्षेत्र में विशेष रुप से दबदबा बनाती है।समाज में जो वर्ग या जाति अधिक उच्च वर्ग मे या विकसित हो चुकी है उनका ही समाज पर प्रभुत्व देखने को मिलता है। प्रभुत्व की प्रणाली के आधार पर ही समाज मे वोट बैंक जैसी प्रक्रिया का भी विकास हो जाता है क्योकि उच्च वर्ग के लोग वोट बैंक बनाने के लिये निम्न वर्ग के लोगो को सामाजिक व आर्थिक सहायता प्रदान कराते है जिससे कि वोट बैंक प्रकिया को मजबूत किया जाता है।

भारतीय समाज मे परिवार महत्वपूर्ण ईकाई है। परिवार में प्रभुत्व पुरुष को प्राप्त होता है। जिससे महिलाये अपने अधिकारो के प्रति जागरुक नही हो पाती है।साथ ही समाज विकास कार्यक्रमों में भागीदारी नही दे पाती है।शक्ति एंव सत्ता के आधार पर ही किसी भी राज्य की व्यवस्था को सुचारु रुप प्रदान किया जा सकता है।

vo/kkj.kkRed : ij[kk

xkeh.k fodkl– भारतीय अर्थव्यवस्था में ग्रामीण विकास स्वभाविक एवं रूचिप्रद विषय है।ग्रामीण विकास का तात्पर्य लोगो में होने वाले आर्थिक विकास के साथ साथ समाज के सम्पूर्ण विकास से है। ग्रामीण लोगो के आर्थिक विकास तभी सम्भव हो सकता है जब ग्रामीण विकास प्रक्रिया में अधिकाधिक जन सहभागिता सुनिश्चित की जाये। साथ ही समाज विकास के लिये स्वास्थ्य, शिक्षा, जल, स्वछता, आवास आदि की स्थिति में सुधार और ग्राम जनों की मनोवृत्तियो में बदलाव से है। ग्रामीण गरीब प्रांय कम उत्पादकता बेरोजगारी अल्परोजगार का फलन होती है। इसलिये गांव में उत्पादकता और रोजगार के अवसरो मे वृद्धि करना भी विकास की प्रक्रिया से समद्ध है।

स्थानीय स्वशासन– स्थानीय स्वशासन का तात्पर्य उन सभी संस्थाओ ईकाई के शासन से है जो जनता द्वारा चुनी जाती है। तथा जिन्हे राष्ट्रीय अथवा प्रांतीय सरकार के नियंत्रण में रहते हुये स्थानीय शासन के मामलो में अधिकार और दायित्व प्राप्त होते है।स्थानीय स्वशासन को ऐसा शासन कहा गया है। जो अपने सीमित क्षेत्र में प्रदत्त अधिकारो का उपयोग करता है साथ ही समस्याओं के समाधान मे उपयागी होता है। परन्तु स्थानीय स्वशासन अपने क्षेत्र में सम्प्रभु नही होती क्योकि वह राज्य विधान मण्डल के द्वारा संचालित होता है।

स्थानीय स्वशासन का संचालन स्थानीय जनता द्वारा ही किया जाता है। क्योकि जनता के द्वारा ही समस्याओं को भली भांति समझा जा सकता है।भारत में पंचायती राज प्रणाली का केन्द्र भारतीय स्वशासन प्रणाली ही है। इस प्रणाली का गणन राज्य विधान मण्डल के अधिनियमों द्वारा निचले स्तर पर जनतंत्र स्थापित करना है। जिससे ग्रामीण विकास कार्य किये जा सके।

Ckh :xk[ky: d: vu|lkj – स्थानीय स्वशासन किसी विशिष्ट क्षेत्र का स्थानीय लोगों द्वारा एवं उनके द्वारा ही निर्वाचित प्रतिनिधियों के माध्यम से प्रशासन है।

Ikh : LVku d: vu|lkj– स्थानीय शासन किसी देश के शासन का वह भाग है, जो किसी विशेष क्षेत्र में जनता से सम्बन्धित मामलो का प्रशासन करता है।

Lkkekftd cfg"dj.k– इसे सामाजिक अपवर्जन के नाम से भी जाना जाता है। यह वह प्रक्रिया हैं जिसके द्वारा किसी समूह को मुख्य से निकालकर सीमान्त पर पहुॅचा दिया जाता है। सबसे पहले इसका

प्रयोग फ्रांस में हुआ था। इसका प्रयोग शिक्षा समाज राजनीतिक, अर्थनीति आदि विभिन्न क्षेत्रो में किया जाता है इसी प्रकार स्थानीय स्वशासन की प्रक्रिया में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में इसका स्वरूप देखने को मिलता है।

xke i;pk;r– भारत की पंचायती राज प्रणाली में गांव या छोटे स्तर पर ग्राम पंचायत होती है। जो भारत के स्थानीय स्वशासन का प्रमुख अवयव है प्राचीन काल के ही भारतवर्ष के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक क्षेत्र में पंचायत का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सार्वजनिक जीवन का प्रत्येक पहलू इसी के द्वारा संचालित होता है। साथ ही ग्रामीण विकास कार्यक्रम को पंचायती राज व्यवस्था द्वारा सुचारू रूप प्रदान किया जाता है।

bl&i;pk;r &देश में ग्राम पंचायतो में शासन की गुणवत्ता सुधार के लिए केन्द्र सरकार ने सभी पंचायतों को ई–सक्षम बनाने के लिए ई–पंचायत मिशन मोड परियोजना आरम्भ की हैं। जो पंचायत के कार्य को कुशल और पारदर्शी बनाएगी। ई–पंचायत का उद्देश्य पंचायती राज संस्थाओ को आधुनिकता, दक्षता, उत्तरदायित्व का प्रतीक बनाना एवं सूचना व संचार प्रौघोगिकी के द्वारा वृहत् ग्रामीण आबादी को अभिप्रेरित करना है। ई–पंचायतों द्वारा पंचायतों के लिए राष्ट्रीय पंचायत निदेर्शिका, पंचायत लेखांकन योजना का ऑनलाइन कार्यान्वयन, शिकायत निवारण आदि सेवाएं प्रदान करना संभव हो पाया है।

Hkkjr e: LoRkU=rk l: iio: LFkkuh; Lo'kklu dk bfrgkl

ब्रिटिशकालीन स्वशkklu – ब्रिटिशकालीन स्वशासन को चार चरणो में रखा है

iFke pj.k ¼1687&1880½ 1687 में सम्राट जेम्स द्वितीय के आदेश से मद्रास नगर निगम की स्थापना की गयी । यह भारत में स्थापित पहला नगर निगम था।

1720 में मद्रास बम्बई और कलकत्ता तीनो प्रेसीडेसियो में मेयर को कोर्ट की स्थापना की गयी। मेयर को न्यायिक अधिकार भी प्राप्त थे।

f}rh; pj.k– इसकी शुरूआत वायसराय लार्ड रिपन के सुधारो से होती है। इन्होने ही सर्वप्रथम निर्वाचन को स्वशासन का आधार बनाया। रिपन प्रस्ताव 1882 में स्वशासन पारित करवाया जिसके प्रमुख प्रावधान थे। स्थानीय प्रशासन के सदस्य तथा अध्यक्ष गैर सरकारी निवार्चित होगे। तथा ईकाईयो पर राज्य नियंत्रण प्रत्यक्ष न होकर परोक्ष होगा।

राजकीय आयोग (1907) – 1907 में विकेन्द्रीकरण की दशा में राजकीय आयोग का गठन हुआ जिसका उद्देश्य केन्द्र प्रोत संस्थाओं के परस्पर प्रशासनिक वित्तिय सबंधों की जॉच कर सुझाव देना था।

r'rh; pj.k– 1914 में शुरू विश्व युद्ध में एनीबेंसेट और लोकमान्य तिलक ने स्वशासन आन्दोलन छेड़ा जो स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक भारतीय को स्वशासन देने की मॉग कर रहा था।

केन्द्रिय प्रस्ताव (1918)–केन्द्रिय प्रस्ताव 16 मई 1918 को पारित किया जिसके द्वारा नगरीय निकायो में निर्वाचित सदस्यो का बहुमत दिया गया।

भारत शासन अधिनियम (1919) – इसमें राज्यो में द्वैध शासन स्थापित किया। इसमे निवार्चित मंत्रीयो के अधीन स्थानीय प्रशासन रखा गया। इस एक्ट के मात्र स्थानीय संस्थाओं के द्वारा लागू करने वाले करो की एक सूची निर्धारित कर दी जिससें स्थानीय संस्थाओ के कार्य क्षेत्र में वद्धि होगी।

prFk pj.k (1937–1947) – 1935 के भारत शासन अधिनियम ने राज्यो में द्वैध शासन समाप्त किया। प्रांतो में स्थानीय स्वशासन को भी नियंत्रण मुक्त अधिक स्वायत्त बनाने के प्रयास किये गये।

Hkkjr e LoRkU=rk l Ik'pkr LFkkuh; Lo'kklu dk bfrgkl

भारत में पंचपरमेश्वर की अवधारणा बहुत पुरानी हैं। प्राचीन काल से ही भारतीय गांव में पंचायतों का किसी न किसी रूप में अस्तित्व रहा हैं। यघपि समय के साथ–साथ उनके स्वरूप और कार्य क्षेत्र मे परिवर्तन हुआ है। स्वतन्त्र भारत मे पंचायती राज शब्द cyoUr jk; egrk के लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण प्रतिवेदन से अस्तित्व में आया।

संविधान के 73 वे संशोधन अधिनियम 1992 द्वारा पंचायती राज को संवैधानिक दर्जा प्राप्त किया गया है। तथा केन्द्र स्तर पर ग्रामीण विकास की देखरेख विकास मंत्रालय द्वारा की जाती है। संविधान की सातवी अनुसूची मे वर्णित राज्य सूची मे संविधान सभा प्रक्रिया को शामिल किया गया है।

1957 e cyoUr jk; egrk lfefr ने पंचायती राज प्रणाली को तीन स्तरो मे विभक्त किया गया

ग्राम स्तर : ग्राम पंचायत

ब्लाक स्तर : पंचायत समिति

जिला स्तर : जिला परिषद

राजस्थान देश का पहला राज्य था जहां पर पंचायती राज की स्थापना हुयी। इस व्यवस्था का शिलान्यास 2 अक्टूबर 1959 को राजस्थान के नागौर जिले मे प्रधानमंत्री द्वारा किया गया। इसके पश्चात आन्ध्रप्रदेश में इस योजना को 1959 में अनुसरित किया गया।

अशोक मेहता समिति– जनता पार्टी की सरकार द्वारा 1977 में पंचायती राज संस्थाओं के सम्बन्ध मे अशोक मेहता समिति की नियुक्ति की। इस समिति ने 1978 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। जिसमें पंचायती राज व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिये 132 सिफारिशे की गयी परन्तु जनता पार्टी सरकार की स्थिति कमजोर होने के कारण अशोक मेहता समिति की सिफारिशो पर कार्यवाही नही हो सकी।

th oh d jko lfefr–1985 में ग्रामीण विकास और निर्धनता उन्मूलन कार्य के लिये योजना आयोग द्वारा जी.वी.के राव समिति की स्थापना की गयी। इस समिति का मानना था कि विकास की प्रक्रिया द्वारा नौकरशाहीकरण हो रहा हैं। जिससे पंचायती राज प्रणाली बाधा पड़ रही है तथा इस समिति द्वारा पंचायती राज प्रणाली की प्रक्रिया को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिये निम्न सिफारिशे की गयी इस प्रकार समिति ने फील्ड प्रशासन की विकेन्द्रक्रत कार्य में पंचायती राज प्रणाली को अग्रणी भूमिका प्रदान की।

,y ,e fl?koh lfefr– राजीव गांधी सरकार ने 1986 में रीवाइटलाइजेशन ऑफ पंचायती राज इस्टीट्यूशन फॉर डेमोक्रेसी एवं डेवलपमेनट विषय पर एल.एम.सिंघवी समिति की स्थापना की। समिति ने सुझाव दिया कि पंचायती राज निकायो के नियमित स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावो के लिये संविधान में प्रावधान किये जाने चाहिये। गांव समूहो के लिये गांम पंचायतें बनायी जानी चाहिये।

ih d Fkxu lfefr & पंचायती राज व्यवस्था को शक्तिशाली बनाने हेतु 1988 में संवैधानिक दर्जा दिलाने की सिफारिश की।इस समिति के सुझाव के आधार पर 1989 में संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तुत किया गया। परन्तु राज्यसभा में बहुमत न होने की वजह से यह विधेयक पारित नही हो सका।

lkfgR; lo{k.k

pUnk iVkuh 2006–"ग्रामीण स्थानीय स्वशासन" अध्ययन का उद्देश्य स्थानीय स्वशासन की प्रक्रिया को जानना।इन्होने अपने अध्ययन में ग्रामों में स्थानीय प्रशासन से सम्बन्धित सभी पक्षो का आलोचनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया।साथ ही प्रजातान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया के आधार पर स्थानीय

स्वशासन की प्रक्रिया को समझा सुझाव दिया कि प्रजाताऩ्त्रिक विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया के आधार पर ही ग्रामीण विकास के साथ साथ समस्याओ का समाधान किया जा सके।

Mk gfj'ापन्द्र शर्मा –"भारत में स्थानीय स्वशासन" प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय राजनीति के उभरते हुये उन सभी प्रश्नो के समाधान का प्रयास है जो प्रजातऩ्त्र की जडों को शहरी तथा ग्रामीण जीवन से जोडता है। इस अध्ययन में भारतीय स्थानीय संस्थाओ के सैद्धान्तिक व व्यवहारिक समस्याओ को लिया गया है। तथा समस्याओ के सुझाव प्रस्तुत किये गये है। रचना का उद्देश्य स्थानीय संस्थाओ के अधिकारियो विघार्थियो तथा अन्य कर्मचारियो को उनके दायित्वो से परिचित कराना है। जिससे कि राजनीतिक भविष्य को स्थिरता और निश्चितता प्राप्त हो सके।

jk'kuh ukUny 1996–"वूमैन डवलपमैंट एण्ड पंचायती राज" अध्ययन का उद्देश्य हरियाणा जिले की पंचायती राज व्यवस्था को जानना था। इन्होने हरियाणा राज्य के रोहतक जिले की पंचायती राज की पृष्ठभूमि अध्ययन किया है। तथा इन्होनें पंचायती राज में महिलाओ की सहभागिता गरीबी उन्मूलन कार्यक्रमों का भी अध्ययन किया है साथ ही महिलाओं के विकास कार्यक्रम और पंचायती राज में गहरा सम्बन्ध देखा जा सकता है।तथा निष्कर्ष निकाला कि जब पंचायत व्यवस्था सुचारू होगी तो महिलाओं का विकास भी सम्भव हो सकेगा।

, l ,u feJ–"लोक प्रशासन के बदलते आयाम" ने अपने अध्ययन में जनसत्ता को संगठित करने तथा उनकी गतिविधियो का अध्ययन किया है। इसमें जनतन्त्र की प्रक्रिया के आधार पर अदा और प्रदा की प्रक्रिया द्वारा राजनीतिक व्यवस्था को समझने का प्रयास किया गया है इनके लेख में लोक प्रशासन से हटकर उसके व्यवहारिक पक्ष पर भी अधिक बल दिया गया है।

vk'kqrk"k JhokLro 2004 –"विकेद्रीकरण एवं पंचायती राज" ने अपने वाराणसी जनपद पर किये गये अध्ययन मे कहा है कि ग्रामीण क्षेत्रों मे उभरता नेतृत्व आयु व शिक्षित वर्ग से सम्बन्धित है। तथा जातिय श्रेष्ठता को स्वीकार करते हुये कहा है कि निम्न एवं पिछडी जाति के सदस्य जनतांन्त्रिक बृद्धि के कारण नेतृत्व प्रक्रिया में तेजी से आगे बड़ रहे है तथा पंचायती राज के सम्बन्ध में ग्रामीण विकास ही नही बल्कि सम्पूर्ण भारत में विकास की धूरी माना है इसकें अतिरिक्त संस्था को कल्याणकारी बनाने के लिये वित्तीय न्यायिक अधिकारों मे बृद्धि का समर्थन किया है।

e/kq jkBkSj 2002– पंचायती राज की दशा में महिलाओं पर अध्ययन किया तथा उन्होने महिलाओ की दशा दिशा सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य आदि से अपने अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि राजनीतिक अधिकार सुदृढ़ अर्थव्यवस्था तथा महिला सशक्तिकरण हेतु विभिन्न योजनाओ से महिलाओं मे चेतना आ रही है साथ ही यह परिवार समाज के विकास के साथ–साथ राष्ट्रीय विकास मे सहायक होगी।

vk'kh"k HkV~V 2002–"लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण एवं जनजातीय नेतृत्व" ने अपने अध्ययन में मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के अध्ययन से यह स्पष्ट किया कि लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण से उभरते हुये जनजातीय नेतृत्व के लिये यह प्रथम अनुभव प्रशिक्षण के समान ही है इस प्रक्रिया से अशिक्षित मध्यम आय वर्ग के सदस्यो का नेतृत्व उभरा है। जनजातिय समाज के अत्यधिक पिछड़ेपन रीति रिवाजो के चलते उनके लिये किसी भी औपचारिक व्यवस्था का शीघ्रता से आत्मसात्मीकरण करना संभव नही है। इसके बावजूद भी इन्होनें अपने अध्ययन के आधार पर जनजातीय समाज के कार्यो के लिये लोगो के नेतृत्व को बढ़ावा दिया।

pUnz izdk'k oFkZoky 1997–"वैदिक वाडंमय नारी" ने अपने अध्ययन में भारत सहित विभिन्न देशो की पंचायत राज व्यवस्था का अध्ययन किया तथा भारत के सन्दर्भ में उन्होने पंचायती राज की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एंव 73वे संविधान संशोधन का अध्ययन करते हुये पंचायत राज व्यवस्था के कार्य सम्बंधी दुर्बलता बताते हुये कहा कि 73 वां सशंोधन बिना राज्यो का विश्वास प्राप्त किये पंचायत राज व्यवस्था में पुनर्गठन और सुधारो को लाने का प्रयास करता है।

fl)kFkZ ljdkj ,oa fufru ukjk;.k 2006 &"इम्पावरमेंट ऑफ वूमैंन, थ्रूर पॅालिटिकल पार्टिसिपेशन" इनके अध्ययन का उद्देश्य राजनीतिक प्रक्रिया में महिला के सशक्तिकरण को जानना साथ ही अपनी सम्पादित पुस्तक में विभिन्न लेखको के द्रष्टिकोण से लिंगीय विकास के आयामो तथा राजनीति मे उनकी भूमिका एंव परस्पर सम्बन्धो को समझने का प्रयास किया गया है जिससे कि समाज विकास की प्रक्रिया के साथ राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय विकास भी सम्भव हो सके।

Mkå uhfyek dqoj rFkk lhek dukSft;k 1998 – अपनी पुस्तक "पंचायती राज में महिला ग्राम प्रधानो की भूमिका" के अन्तर्गत लेखक का उद्देश्य पंचायती राज व्यवस्था में विशलेषण विधि का प्रयोग करते हुये बताया है, कि पंचायत राज व्यवस्था में कि 73वे संविधान संशोधन ने महिलाओ को अधिकार

तो प्राप्त किये है, परन्तु वह उनका पूर्ण रूप से प्रयोग नही कर पाती है। जिसका प्रमुख कारण शिक्षण और प्रशिक्षण। जब महिलायें अनिवार्य रूप से प्रशिक्षण प्राप्त करेगी तो वह देश के विकास में सहयोग दे सकेगी।

mfelyk tlu 2002 –"पंचायत में निर्वाचित महिलायें और ग्रामीण विकास" इनके अध्ययन का उद्देश्य पंचायतों में निर्वाचित महिलाओं का अध्ययन करना। इन्होने राजस्थान के नागौर जनपद की 11 पंचायतों की प्रतिनिधि महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति का अध्ययन किया इन्होनें अपने अध्ययन मे पाया कि पंचायतों में प्रतिनिधि महिलाओं की सक्रियता नामात्र की है क्योकि उनके स्थान पर पुरुष ही कार्य करते है। पंचायती कार्यो के लिये अधिकांष महिलायें असमर्थ प्रतीत होती है।

ehuk{kh iokj 1995 &"पंचायती राज और ग्रामीण विकास" अध्ययन का उद्देश्य ग्राम पंचायत औेर ग्रामीण विकास को जानना था।मध्यप्रदेश के खरगोन जिले की ग्राम पंचायतों के अध्ययन में बताया है कि पंचायत ग्रामीण विकास में किस प्रकार सहायक है।पंचायतें देश के विकास में मूल है यदि पंचायत प्रतिनिधि शिक्षित होगी तभी ग्रामीण विकास सम्भव होगा साथ ही पंचायत अपनी भूमिका बेहतर तरीके से निभा सकेगीं। तथा कार्यप्रणाली की प्रक्रिया को सुचारू रूप प्रदान करेगी।

,e d ekguk ik=k–"प्रोफाइल एण्ड पार्टिसिपेशन ऑफ लेजिस्लेचर इन इण्डियन स्टेट" ने अपने अध्ययन में पाश्चात्य देशो में किये गये अध्ययन को आधार बनाकर उडीसा राज्य में महिलाओं की राजनीति में रूचि को जानने व उनके राजनीतिक प्रक्रिया में प्रवेष को प्रभावित करने वाले कारणो को ज्ञात करने का प्रयास किया। इन्होने अपने अध्ययन में महिलाओ की राजनीतिक दल की स्थिति व प्रभाविता का अध्ययन किया व पाया कि महिलायें खास तौर पर अपने परिवार से प्रभावित होती है।

vut dpu ,o nRRkk jk; 2012 &"पंचायती राज सिस्टमः ए रोल टू वूमैन इन नार्थ इस्ट इण्डिया" ने अपने अध्ययन में भारतीय महिलाओं की राजनीतिक स्थिति के सन्दर्भ मे अध्ययन कियां। साथ ही उनका मानना था। कि राजनीति में महिलाओं की सहभागिता निम्न होती है। जिसका मुख्य कारण समाज का सामंती प्रारूप माना जाता है। इनका मानना था कि कार्यपालिका व विधायिका में महिलाओं की संख्या के आधार पर आरक्षण ज्यादा से ज्यादा संख्या में महिलाओ को इन संस्थाओ में प्रवेश दिया जाना चाहिए।

vkHkk pkgku 2003–"वूमैन पार्टिसिपेशन इन पंचायत" ने मध्यप्रदेश की अनुसूचित जाति की महिला पर अध्ययन किया। अध्ययन प्रक्रिया में राजनीतिक प्रक्रिया में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि ये महिलायें राजनीतिक क्रिया कलापो में बहुत हद तक अपने परिवार वालो खास तौर पर पति पर निर्भर रहती है। पंचायतो में आरक्षण के माध्यम से पंचायती राज संस्थाओ को कम पंहुच वाली महिलाओं को भी जगह मिली है। फिर भी महिलाओं के सामने कई सामाजिक समस्याये है जो उनकी राजनीतिक सहभागिता को प्रभावित करती है।

lHkk"k jfr;k 2007–"पंचायती राज और महिला सशक्तिकरण" ने अपने अध्ययन में महिलाओ की कार्य क्षमता व ऊर्जा का अभाव नही है। आवश्यकता इस बात की है कि नौकरशाही सरकार और समाज उनका साथ दे और उचित प्रशिक्षण प्रोत्साहन मिलता रहे तो वह विकास प्रक्रिया में भागीदारी हो सकेगी। जैसे –जैसे महिला साक्षरता का प्रतिषत बढेगा वैसे–वैसे महिला पंच सरपंच अधिक कार्य कुशलता के साथ गांव मे सामाजिक, आर्थिक, सास्ंकतिक जीवन को बेहतर बनाने में अपनी भूमिका बढ़ायेगी। यही नही पंचायतें उनके भावी राजनीतिक जीवन पालना सिद्ध होगी।

Mh ih N=h 2013–"विकास में लोगो की भागीदारी" इन्होने अपने अध्ययन में समाज विकास का अध्ययन किया तथा लोगो की समाज विकास गतिविधियो भूमिका व निर्णय प्रक्रिया का अध्ययन किया। सांथ ही समाज प्रक्रिया मे ग्रामीण विकास का भी अध्ययन किया। इन्होने अपने में निष्कर्ष निकाला कि विकास प्रकिया न केवल शारीरिक भागीदारी पर निर्भर करती बल्कि कार्यक्रमों और परियोजनाओं कार्यन्वयन में समुदाय की भागीदारी पर निर्भर करती है।

Tkh ,l egrk 2002–पार्टिसिपेंशन ऑफ वूमैंन इन दा पंचायती राज सिस्टम" व्यवस्था सामाजिक व सांस्कृतिक प्रक्रिया के फलस्वरूप विकसित हुयी है। इस व्यवस्था मे निम्न जातियो की तुलना मे उच्च जातियो की महिलाओं का अधिक बोलवाला रहता है क्याकि वह सामाजिक व आर्थिक रूप से सक्षम होती है। साथ ही शिक्षित होती है। अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि आर्थिक व राजनीतिक रूप से मजबूत पृष्ठभूमि की महिलायें इस व्यवस्था में अधिक सक्षम है। इस पृष्ठ्रभूमि की महिलायें पुरूषो के साथ विभिन्न विकास कार्यक्रमों मे भाग ले रही है। साथ ही पुरूषो की तुलना मे महिलाओं की भागीदारी कम दिखाई देती है।

कौशिक Mk. txohj 2010"कुरूक्षेत्र पत्रिका" इन्होने अपने अध्ययन मे बताया कि किसी देश का विकास तब तक सम्भव नही हैं जब तक उसके गांव का विकास सम्भव न हो जाए। अतः गांव का विकास पंचायतों पर ही निर्भर है। अतीत बताता है कि जब तक ग्रामीण क्षेत्र का विकास मुख्य धारा से कटा रहा तब तक भारत की नीव विकास के नाम पर खोखली रही है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे ग्रामीण विकास कार्यक्रमों एवं गांव निमार्ण योजना के द्वारा पंचायतों गांव को विकास के मुख्य धारा मे जोडती है जिसमें गांव में रहने वाले लोगो एवं गांव का विकास होता है।

flgMk Jhefr m"kk 2006 "त्रैमासिक शोध पत्रिका" इन्होने अपने अध्ययन में बताया कि ग्राम पंचायतों को ग्राम के विकास के लिए कोई नई योजनाएं बनाने की जरूरत नही बल्कि पहले से चल रही विकास योजनाएं ग्राम विकास के लिए काफी है। ग्राम पंचायत को पहले से ही चल रही योजनाओं को प्रशासनिक सुदृढता के साथ चलाए जाने की आवश्यकता है ग्राम की अंधोसंरचना के विकास योजनाओं पर बल दिया है जिससे गांव के लोगो की समस्याओं का निराकरण हो सके और लोगों को योजनाओं से ज्यादा लाभ मिल सके।

leL;k dk dFku

पंचायती राज संस्थान जिसके माध्यम से शक्ति का विकेन्द्रीकरण किया जाता है लोकतंत्र को सामाजिक आर्थिक का एक प्रभावी तंत्र माना जाता है। इसमें जमीनी स्तर पर परिवर्तन व राजनीतिक भागीदारी सुनिश्चित है। वास्तव में एक समद्ध गतिषील लोकतांत्रिक ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था का निर्माण भारत सरकार द्वारा किया जाता है। 73 वां संविधान संशोधन 1992 द्वारा लोकतंत्र को जमीनी स्तर पर संथागत रूप देने की मांग की। इसके द्वारा स्थानीय निकायो के लिए समय समय पर चुनाव कराना अनिवार्य है राज्य सरकार की षक्ति को कम करने के लिए इसे तीन भागो मे गांव, ब्लांक, जिले मे बांटा गया जिसके माध्यम से लोकतांत्रिक जनप्रतिनिधि विकास के कार्य कर सके। प्रस्तुत अध्ययन मे ग्राम पंचायतो में समावेशन की प्रकिया का अध्ययन किया जायेगा। समुदाय के लोग लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया का योगदान किस प्रकार का है तथा अपने समुदाय समाज के विकास के लिये किस प्रकार से कार्य कर रही है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत अध्ययन समाज मे लोगो के परिवर्तित द्रष्टिकोण को भी समझने मे सहायता देगा।

v/; ;u dk egRo

प्रस्तुत अध्ययन ग्राम पंचायत तथा सामाजिक समावेशन की प्रक्रिया पर आधारित होगा। इस अध्ययन की महत्वता में यह दषाने का प्रयास किया जायेगा। कि किस प्रकार ग्राम–पंचायत स्थानीय स्वशासन की विकास प्रक्रिया के लिये कार्यरत है। स्थानीय स्वशासन पर आधारित अध्ययन के आधार पर जातिगत तथा लैंगिक भेदभाव की प्रक्रिया के साथ पंचायतों में तकनीकि और प्रौद्योगिकी के प्रति अन्तदृष्टि प्रदान करने में सहायता प्रदान होगी। इसके अध्ययन के महत्व में यह भी दर्षाया जायेगा। कि समाज के हाषिये पर हाषिये पर रहने वाले लोगो के प्रति निर्माताओ को वैचारिक आधार प्रदान करने में सहायता मिलेगी।

v/; ;u ds mÌs';

- उत्तरदाताओ में सामाजिक, आर्थिक एंव राजनीतिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- उत्तरदाताओ में शासकीय कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना
- ग्राम पंचायत के शासकीय कार्यक्रमों के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।
- 73वे संविधान संशोधन द्वारा जन समावेशन की प्रक्रिया का अध्ययन करना।
- शासकीय कार्यक्रमों की सफलता में ग्राम पंचायत की भूमिका का अध्ययन करना।

ifjdYiuk

- उत्तरदाताओं के सामाजिक, आर्थिक एंव राजनैतिक स्थिति पूर्व की तुलना में अच्छी है।
- शासकीय कार्यक्रमों में जागरूकता का प्रमुख कारण जातिगत मानसिकता व अशिक्षा का पाया जाना है।
- शासकीय कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में प्रोघौगिकी एंव तकनीकि का कम प्रयोग करना है।
- सूचना एंव शिक्षा के अभाव में ग्राम विकास याजनाओं की भूमिका संतोषप्रद नही है।
- जागरूकता का अभाव पंचायतों के शासकीय कार्यक्रमों के सफलता का प्रमुख कारक है।

'kks/k i)fr'kkL=

'kks/k izk:jpuk–

प्रस्तुत अध्ययन शासकीय कार्यक्रमों के विकास प्रक्रिया पर आधारित होगा। जिसको पूरा करने के लिए वर्णात्मक एवं विवेचनात्मक शोध प्ररचना के माध्यम से न केवल कार्य कारण सम्बन्धों की व्याख्या की जायेगी बल्कि ग्राम पंचायत की शासकीय कार्यक्रमों की जन समावेशन की प्रक्रिया का अध्ययन किया जायेगा।

v/;;u {ks=&

प्रस्तुत अध्ययन आगरा जनपद पर आधारित है। इसमे ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद सम्मिलत हैं जिसमें अध्ययन क्षेत्र के रूप मे ग्राम पंचायत को चुना जायेगा।

v/;;u lexz &

प्रस्तुत अध्ययन के समग्र के रूप में आगरा जनपद के 15 ब्लांक में सें तीन ब्लांक को चुना जायेगा। जिसमें एत्मात्पुर, खन्दौली एंव अछनेरा ग्राम पंचायतें होगी।

fun'kZu–

प्रस्तुत अध्ययन उद्देश्यपूर्ण निर्दशन के आधार पर तीन ब्लांक को चुना जायेगा। जिसमें 169 गांव शामिल है जिसमें प्रत्येक गांव की ग्राम पंचायतों को लिया जायेगा।

vkxjk tuin ds xzke iapk;rks dh vkjf{kr lhVks ds vk/kkj ij lwph

Xkke iapk;r	vuq0 tk0	vuq0 tk0e0	Ekfgyk	vU;0fi0oxZ	vukjf{kr	vU;0fi0oxZ0e0
,RekRiqj	8	4	8	4	8	15
[kUnkSyh	6	4	6	7	13	3
vNusjk	6	4	9	4	10	19

v/;;u ly;U=–

प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित जानकारी प्राप्त करने हेतु अध्ययन संयन्त्र के रूप में अद्धसहभागी अवलोकन, वैयक्तिक अध्ययन पद्धति, साक्षात्कार, अनुसूची विधि का प्रयोग किया जायेगा। जिसमे खुले व बन्द दोनो प्रकार के प्रश्नो का प्रयोग किया जायेगा।

'kks/k vUrjky &

प्रस्तुत अध्ययन में साहित्य पुर्नावलोकन के द्वारा यह ज्ञात किया गया है कि ग्रामीण विकास प्रक्रिया में पंचायती राज व्यवस्था की अहंम भूमिका है। साथ ही इससे महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आया है।परन्तु सामाजिक समावेशन की विकास प्रक्रिया के साथ तकनीकि व प्रौघोगिक का अभाव देखा गया है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से गाम पंचायतों में सामाजिक समावेशन की विकास योजनाओं के साथ तकनीकि व प्रौघोगिक का अध्ययन किया जायेगा। जिसमे सामाजिक समावेशन की प्रक्रिया का पूर्ण रूप अध्ययन किया जायेगा।

rF; ladyu ds L=ksr –

प्रस्तुत अध्ययन में समस्या से सम्बधित तथ्यो के संकलन हेतु दो प्रमुख स्त्रोतो का अध्ययन किया जायेगा।

izkFkfed L=ksr– प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक स्त्रोत द्वारा तथ्यो के संकलन हेतु प्रश्नावली और साक्षात्कार, अनुसूची के आधार पर क्षेत्रीय कार्य द्वारा तथ्य संकलन का कार्य किया जायेगा।

f}rh; L=ksr– प्रस्तुत अध्ययन में द्वितीय संकलन का कार्य पत्र पत्रिकाये, अखबार, इन्टरनेट आदि उपलब्ध सामग्री का समावेश किया जायेगा।

rF;ksa dk lEiknu] ladsru] oxhZdj.k o fo'ys"k.k&

तथ्यो का सम्पादन, संकेतन, वर्गीकरण व विश्लेषण के पश्चात् तथ्यो की जाच की जायेगी। संकेतन के पष्चात् तथ्यो को समानता असमानता गुणो के आधार पर बाटा जायेगा।अंत मे तथ्यो का विश्लेषण भी किया जायेगा।

rF;ksa dk fp=k ,oa js[kk fp=k esa çn'kZu &

परिणामो का आकर्षण व सुविधाजनक प्रस्तुत करने के लिये उन्हे चित्रो एंव रेखा चित्रो में भी प्रदर्शन किया जायेगा।

fu"d"kZ ,oa lkjka'k&

प्रस्तुत अध्ययन से सम्बन्धित निष्कर्ष एंव सांराश को भी लिखा जायेगा।

çLrkfor lwph

çFke v/;k;–प्रस्तावना

f}rh; v/;k; &शोध प्रचना

rrh; v/;k;–उत्तरदाताओं के सामाजिक, आर्थिक एंव राजनीतिक प्रष्ठभूमि का अध्ययन करना।

prFk v/;k;&उत्तरदाताओं में शासकीय कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना

ipe v/;k;&ग्राम पंचायतो के शासकीय कार्यक्रमों के मार्ग में आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करना।

"k"B v/;k;&73वे संविधान संशोधन द्वारा के जन समावेशन की प्रक्रिया का अध्ययन करना।

llrEk v/;k;&शासकीय कार्यक्रमों की सफलता में ग्राम पंचायत की भूमिका का अध्ययन करना।

v"Be v/;k; &निष्कर्ष एंव सुझाव

संदर्भ ग्रन्थ सूची

क्षेत्रीय अनुभव

साक्षात्कार अनुसूची

lUnHk lph

- जैन, उर्मिला, 2002, पंचायत में निर्वाचित महिलायें और ग्रामीण विकास,वर्ष 47, नई दिल्ली
- मोहना पात्रा, एम; के, प्रोफाइल एण्ड पार्टिसिपेंशन ऑफ लेजिस्लेचर इन इण्डिन स्टेट, इण्यिन जनरल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, वा 32
- कुंवर, नीलिमा एवं कनौजिया 1998 पंचायत में महिला ग्राम प्रधान की भूमिका, कुरूक्षेत्र, नई दिल्ली 43
- कंचन, अनुज एव राय दत्ता 1995 पंचायती राज सिस्टम; ए रोल टू वूमेन इन नार्थ इस्ट इण्डिया, कानसेप्ट पब्लिसिंग कम्पनी, नई दिल्ली
- पवार, मिनाक्षी, 1995 पंचायती राज और ग्रामीण विकास, क्लासिकल पब्लिकेशन कंपनी, नई दिल्ली
- सिन्हा, नीरज 2007 इम्पावरमेंट ऑफ वूमैंन, थूर पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन, कल्पाज, दिल्ली

- सरकार, सिद्धार्थ एवं नारायण, नितिन 2006 जेंडर डेवलपमेंट एण्ड पॉलिटिक्स, सिरियल पब्लिकेशन ; नई दिल्ली
- चौहान, आभा, 2002 वूमैंन पार्टिसिपेशन इन पंचायत, वर्कषॅाप इन्स्टीट्रयूट ऑफ सोशलसांइस, नई दिल्ली
- बी सी नरूला, 2009 पंचायती राज व्यवस्था, अर्जुन पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली
- राठौर,मधु, 2002 पंचायती राज और महिला विकास, पोइन्टर पब्लिशस, जयपुर
- नान्दल,रोशनी 1999 वूमेन डवलपमेंट एण्ड पंचायती राज, स्पीलआउड पब्लिकेशन, प्रो; लि रोहतक
- कौशिका,सुशीला,1993 वुमैन एण्ड पंचायती राज, हर आनन्द पब्लिकेशन, नई दिल्ली
- डां राजकुमारी,एस 2000 भारत मे लोकतांत्रिक विक्रेन्द्रीकरण और नव पंचायती राज, राज पब्लिसिंग हाउस, जयपुर
- डां सिंह बागेशवर 2001 भारत मे स्थानीय स्वशासन, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली
- डां शर्मा हरिश्चन्द्र 1999 भारत मे स्थानीय स्वशासन, कालेज बुक डिपो, जयपुर
- अहुजा,राम 2001 "रिसर्च मैथड" रावत पब्लिकेशन, जयपुर
- बयमेन,अलान 2016 "रिसर्च मैथड" ऑस्फाड यूनिवर्सिटी